Marne ke baad kya hoga ?

WRITER : TARIQ MURTUJA

Uploaded by : http://faizanbhai.blogspot.com

Youtube : http://youtube.com/deenkidawat

Blog: http://sanatandharmaurislam.blogspot.com

RAMPUR INFORMATION CENTER
(TO PROVIDE BEST EFFORTS TOWARDS HELPLESS PEOPLE)

Office :
Shams Navaid Hall, Banglow Azad Khan, Rampur (U.P.) PIN-244901
Ph.: -0595-2326400
E-mail : rampurinfo2009@gmail.com

मरने के बाद क्या होगा ?

कुछ नही ?
आवागमन या पुनर्जन्म ?
स्वर्ग या नर्क में अनन्त जीवन ?

लेखक

तारिक़ मुर्तुज़ा

मरने के बाद क्या होगा?

कुछ नहीं ?
आवागमन या पुर्नजन्म ?
स्वर्ग या नर्क में अनन्त जीवन ?

लेखक
तारिक़ मुतर्ज़ा

अंदर के पृष्ठों में

1. ईश्वर के नाम से जिसने जीवन व मृत्यु की रचना की 3
2. मृत्योपरान्त मत 4
   निष्कर्ष 9
3. आवागमन सिद्धान्त 10
   क. कर्म–योनी व भोग–योनी 11
   ख. न्यायपरायणता के सिद्धान्त 13
   ग. विभिन्न युग व जनसंख्या 15
   घ. आवागमन में श्रद्धा रखने में जोखिम ज़्यादा 16
   ड. मृतक के सामने गरूड–पुराण का पाठ 17
4. कुछ भ्रान्तियाँ व उनका विवेचनात्मक मूल्यांकन 19
   क. छोटे बच्चों को तकलीफ़ व यातनाएं क्यों 19
   ख. बच्चों का पुर्नजन्म 20
   ग. निष्कर्ष 22
5. वेदों में पारलौकिक जीवन 23
   क. वेदों में पारलौकिक जीवन की परिकल्पना 23
   ख. वेदों में स्वर्ग का वृतांत 24
   ग. नर्क का वर्णन 25
6. आवागमन की यथार्थता 28
7. आवागमन की पृष्ठ–भूमि में एक और तथ्य 33
8. पुर्नजन्म का मत 35
9. बाइबिल में पारलौकिक जीवन 35
10. कुरआन में पारलौकिक जीवन 36
11. कुरआन में स्वर्ग का वृतान्त 37
12. कुरआन में नर्क का वृतान्त 38
13. निष्कर्ष व अपील 39

ईश्वर के नाम से
जिसने जीवन व मृत्यु की रचना की

'मौत', 'मृत्यु', 'मर जाना' यह ऐसे शब्द हैं जिनको सोचकर कोई भी मनुष्य सिहर जाता है और इन शब्दों का प्रयोग वह अपने लिए व अपने सगे सम्बन्धियों, बीवी–बच्चों के लिए कदापि नहीं करता है जबकि मौत हमारे जीवन का एक सत्य है। आज इस भौतिक दुनिया में आपको ईश्वर के नास्तिक तो मिल जाएंगे, मगर मौत का नास्तिक कहीं नहीं मिलेगा। हमारे मालिक ने अपने अन्तिम वेद 'कुरआन' में बताया कि 'उसी' ने (अर्थात ईश्वर ने) पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुम में कर्म की दृष्टि से कौन अच्छा है। वह ईश्वर प्रभुत्वशाली बड़ा क्षमाशील है (कुरआन 67:2)। हमें यह भी सन्देश मिला कि प्रत्येक जीवन मृत्यु का स्वाद चखने वाला है, और तुम्हें तो प्रलय के दिन पूरा–पूरा बदला दे दिया जाएगा। अतः जिसे नर्क की आग से हटाकर स्वर्ग में ठिकाना दिया जाएगा, वह सफल रहेगा। रहा यह सांसारिक जीवन, तो यह तो माया–सामग्री के सिवा कुछ भी नहीं (कुरआन 3:185)। हमें यह भी सन्देश दिया गया कि 'तुम जहाँ कहीं भी होगे मृत्यु तो तुम्हें आकर ही रहेगी चाहे तुम कितने मज़बूत किलों में क्यों न हो (कुरआन 4:78)।

किन्तु हमारा प्रश्न तो वहीं का वहीं रहा जो आरम्भ में था कि मरने के बाद क्या होगा? कुरआन ने कहा कि 'और वही (ईश्वर) है जो रात को तुम्हें मौत देता है और दिन में जो कुछ तुम करते हो, उसे वह जानता है। फिर भी वह तुम्हें तुम्हारी नींदों से उठाता है ताकि निश्चित अवधि पूरी हो जाए, फिर उसी की ओर तुम्हें लौटना है, फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते थे। और वही अपने सेवकों पर पूरा–पूरा प्रभुत्व रखने वाला है और वह तुम पर निगरानी करने वाले को नियुक्त करके भेजता है, यहाँ तक कि जब तुममें से किसी की मृत्यु आ जाती है, तो हमारे भेजे

हुए कार्यकर्ता (अर्थात फरिश्ते) उसे अपने-अपने कब्ज़े में कर लेते हैं और वे कोई आलस व गलती नहीं करते। फिर सब ईश्वर की ओर, जो उनका वास्तविक स्वामी है, लौट जाएंगे। जान लो, निर्णय का अधिकार उसी को है और वह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (कुरआन 6:60–62)

इस ईश्वरीय संदेश से ज्ञान हुआ कि हम इस दुनिया में अपना निश्चित समय पूरा करने के उपरान्त मृत्यु को प्राप्त हो जाएंगे और फिर हमारा मालिक एक दिन सबको अपने पास इकट्ठा करेगा और हमारे इस लोक के जीवन का हिसाब लेगा।

मृत्योपरांत मत

मृत्योपरांत मत क्या होगा इसके बारे में, 3 प्रकार के मत मिलते हैं-

- कुछ लोग कहते हैं कि मृत्यु के उपरान्त कुछ भी नहीं होता बस यही सांस्कारिक जीवन है! एक बार हम नष्ट हुए तो दोबारा जीवन प्राप्त नहीं होगा।
- कुछ और लोगों की आवागमन में श्रद्धा है अर्थात् वह मानते हैं कि मृत्यु उपरांत इसी लोक में हमारे किए कर्मों के अनुसार अलग-अलग योनियों में जन्म होगा।
- कुछ और लोग ऐसे भी है जो यह मानते हैं कि हमारी मृत्यु उपरांत हमें अपने मालिक के पास जाना है वहां हमारा हिसाब किताब होगा और फिर किए कर्म अनुसार स्वर्ग या नर्क में जगह मिलेगी।

आइए इन सभी मतों का एक एक करके बुद्धि विवेक के प्रकाश में व ईशग्रन्थों को मानते हुए मूल्यांकन करें।

मृत्योपरांत कुछ भी नहीं है, बस यही सांस्कारिक जीवन है, एक बार हम नष्ट हुए तो पुनः जीवन प्राप्त नहीं होगा।

हमारे भौतिक लोक की यह विडम्बना ही कही जा सकती है कि इस

लोक में रहते हुए हम में से कोई भी परलोक के जीवन को अपनी वर्तमान आँखों से नहीं देख सकता। मरने के बाद जीवन है या नहीं? इसको जानने के सिर्फ दो ही मार्ग हो सकते हैं-

क. ईशग्रन्थों द्वारा जानकारी, जिनकी ईश्वर ने अपने दूतों पर प्रकाशना की या फिर....

ख. बुद्धि विवेक से काम लेकर।

ऊपर दिए गए मतों को मानने वाले लोगों तक या तो ईशग्रन्थ पहुँचें नहीं होते हैं या फिर ईशग्रन्थों का उन्होंने पूर्णतः इंकार कर दिया होता है ऐसे में हमें सिर्फ बुद्धि विवेक से काम लेना होता है। हमें और आप सबको बहुत अच्छी प्रकार से यह बात मालूम होती है कि इस लोक में जीवन गुज़ारते हुए ऐसी बहुत सी दुर्घटनाएं होती हैं जिनके होने से हमारे ऊपर किसी न किसी प्रकार से अन्याय व अत्याचार हो जाता है।

उदाहरणतः एक किसान अपनी भरपूर मेहनत करता है, अपने खेत पर, समय आने पर उसकी फसल भी अच्छी खड़ी होती है मगर एक रात प्राकृतिक संकट पाले के रूप में उसके खेत पर गिरता है और उसकी लहलहाती फसल का बड़ा हिस्सा इस पाले से बुरी तरह प्रभावित हो जाता है। उस किसान ने कितनी ही मेहनत की हो पर हम उसको सिर्फ उतना ही दाम देंगे जितनी वह फसल लाया होगा और उसी हिसाब से देंगे जिस कोटि की उसकी फसल होगी चाहे वह मैं आप ही क्यों न हों। अब इस उदाहरण को सामने रखते हुए हमें यह निर्णय करना है कि 'क्या उस किसान का उस खराब फसल में कोई दोष था', क्या उस किसान को पूर्ण न्याय नहीं मिलना चाहिए? हम और आप सब इस बात पर पूरी तरह सहमति दिखाएंगे कि ऐसे में किसान का कोई दोष नहीं था और उसे उसकी मेहनत के अनुसार पूर्ण न्याय मिलना चाहिए। मगर ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि वह न्याय कहाँ मिले? इस लोक में कोई जन या फिर सरकार उसे उसकी मेहनत का पूर्ण रूप से फल दे ही नहीं सकती। वह तो जैसी पैदावार लाएगा वैसा उसको

भुगतान किया जाएगा। मगर चूंकि उसने अपनी पूरी मेहनत की थी, उस किसान को कहीं तो उसका फ़ल मिलना चाहिए। मगर कहाँ? इसके लिए हमारे अति कृपालु मालिक ने परलोक के जीवन का विधान रखा है जहाँ हर किसी को उसके कर्म अनुसार पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा (कुरआन 3:185)। किसी पर भी कोई अन्याय नहीं होगा (कु० 36:54), कोई किसी के काम नहीं आएगा, हर किसी को स्वयं अपना हिसाब देना होगा (कु० 82:17–19), और उस दिन हर कोई जान लेगा कि वह इस लोक से क्या ले गया है और न्यायशीलता के साथ सब का हिसाब होगा (कु० 36:51–54)। यह एक छोटा सा उदाहरण था जिससे हम और आप भली भांति समझ सकते हैं कि न्याय का एक दिन ज़रूर होना चाहिए जहाँ कण बराबर भी किसी पर अन्याय न हो।

परलोक के जीवन को मानने के लिए हम दूसरा उदाहरण और ले लेते हैं- हिटलर का : हिटलर जर्मनी का एक ऐसा व्यक्ति था जिसके बारे में इतिहासकारों ने लिखा है कि उसने दूसरा विश्वयुद्ध कराया था जिससे अपनी सत्ता को उभारने, बनाने व चलाने के दौरान साठ लाख यहूदियों को मरवाया और क्षति पहुँचाई थी। अब जो लोग अंतिम फैसले के दिन पर आस्था नहीं रखते उनसे मैं यह प्रश्न पूछता हूँ कि अगर उस समय या आज यह हिटलर पकड़ा जाए तो उसको ज्यादा से ज्यादा कोई भी कानून क्या सज़ा देगा, यही न कि उसे फाँसी पर लटका दिया जाएगा या फिर गोलियों से भून डाला जाएगा या फिर तड़पा-तड़पा कर मारा जाएगा बस यही सज़ा तो हो सकती है, इससे ज़्यादा तो कोई कुछ नहीं कर सकता। मगर यह तो सोचो मेरे भाईयो/बहिनो कि ये तो सिर्फ एक जान की हत्या का बदला हुआ अभी तो उसके हिसाब से शेष 60 लाख जानों का हिसाब रह गया वह कौन ले सकता है। हिटलर तो मर गया क्या यह न्याय हो गया, उन 60 लाख जीवों को व उनके परिवार वालों का जिन्होंने अपने परिवार के सदस्य खोकर न जाने कैसे-कैसे दुःख झेले होंगे, या क्या उन आतंकवादियों का कोई हिसाब किताब नहीं होना चाहिए जिन्होंने जहाज़ से बड़ी-बड़ी

इमारतें गिरा दीं या फिर हज़ारों मासूम मानवों की जाने सिर्फ इस वजह से ले ली कि वह उस देश के निवासी थे जहाँ वह आतंकी छिपे हुए थे। आख़िर पूर्ण रूप से हिसाब कहाँ होगा? एक हिटलर ने साठ लाख जानें ले लीं कोई हिसाब लेने वाला नहीं। एक दो या दस आतंकवादियों ने पूरी मानवता को झकझोर कर रख दिया, मगर कोई हिसाब लेने वाला नहीं!!!

नहीं मेरे भाई!!! हिसाब का एक दिन अवश्य ही ऐसा होना चाहिए जहाँ हर किसी को अपने किए की सज़ा मिले और किसी पर भी कण बराबर अन्याय या अत्याचार न हो और ऐसे एक दिन का विधान हमारे दयावान मालिक ने हमारी मृत्यु उपरान्त रखा है जहाँ हर बुराई करने वाले को बुरा बदला दिया जाएगा और अच्छे परोपकारी मनुष्य को अच्छा बदला दिया जाएगा। इस जीवन में तो अगर हिटलर पकड़ा गया तो ज़्यादा से ज़्यादा एक जान का बदला लिया जा सकता है मगर मृत्यु उपरान्त रखा है जहाँ हर बुराई करने वालों को बुरा बदला दिया जाएगा। मगर मृत्यु उपरान्त 'फैसले के दिन' जब अत्याचारियों या आतंकवादियों को ईश्वर के सामने खड़ा किया जाएगा तो वे मानवता के अपराधी काँप उठेंगे (कुरआन) न्यायपरायण व सत्यता स्थापित कर दी जाएगी (कुरआन 40:18–20), यह अपराधी हर ओर से मौत मांगेगे मगर इन्हें मौत न आएगी (कुरआन 14:17, 20:74, 87:13), इनकी त्वचा आग में जलाई जाएगी और तदोपरांत् नई त्वचा दी जाएगी फिर उसे भी जलाया फिर नई त्वचा..... और यह क्रम अनन्त समय तक ऐसे ही चलेगा (कु० 4:56), वह नर्क की भीषण आग में जलाए जाएंगे, पीने को पानी मांगने पर उबलता हुआ, सड़ा पीप का बदबूदार पानी मिलेगा और इसके अतिरिक्त और भी दण्ड मिलेंगे (कुरआन 38:55–58)

यहाँ इन जैसे और अपराधियों को जब इस लोक में दण्ड मिलना असम्भव हो जाता है तो ईश्वर के अन्तिम फैसले का दिन,'मृत्यु उपरान्त जीवन' तर्कसंगत व बुद्धि संगत लगता है तो 'मृत्यु उपरान्त जीवन' होना चाहिए, एक फैसले का दिन भी होना

चाहिए!!!

देखिए अन्तिम वेद 'कुरआन' ने कैसा दृश्य प्रस्तुत किया है उन लोगों के बारे में जो मृत्यु उपरान्त अपने मालिक की भेंट से सन्देह में पड़े हुए हैं–

"और वह कहते हैं: जो कुछ है बस यही हमारा सांसारिक जीवन है, हम कोई फिर उठाए जाने वाले नहीं हैं। और अगर तुम देख सकते जब वह अपने पालनहार के सामने खड़े किए जाएंगे। वह (ईश्वर) कहेगा, 'क्या यह यथार्थ नहीं है?' 'तो ऐसे लोग कहेंगे' 'क्यों नहीं, हमारे पालनहार की कसम! वह कहेगा: 'अच्छा तो उस इन्कार के बदले जो तुम करते हो, यातना का मज़ा चखो।' वे लोग घाटे में पड़े जिन्होंने अपने मालिक से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि जब अचानक उन पर वह घड़ी आ जाएगी तो वह कहेंगे' 'हाय! अफ़सोस, उस गलती पर जो इसके (अर्थात ईश्वर से मुलाकात के) विषय में हुई।' और हाल यह होगा वे अपना बोझ अपनी पीठों पर उठाए होंगे। देखो, कितना बुरा बोझ है जो ये उठाए हुए हैं।" (कु0 6:29–31)

"उन्होंने बड़ी–बड़ी सौगन्ध खा कर कहा: 'जो मर जाता है उसे ईश्वर नहीं उठाएगा।' क्यों नहीं? यह तो एक वादा है, जिसे पूरा करना उसके लिए (अर्थात् ईश्वर के लिए) अनिवार्य है। किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं (कुरआन 16:38)।"

"वे कहते हैं: 'क्या जब हम हड्डियाँ और चूर्ण–विचूर्ण हो जाएंगे, तो क्या हम फिर नए बनकर उठेंगे?' कह दो: 'तुम पत्थर या लोहा हो जाओ, या फिर कोई और वस्तु जो तुम्हारे कवचार में और भी सख़्त हो।' तो वह कहेंगे: 'कौन हमें पलटाकर लाएगा? कह दो: 'वहीं जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया।' तब वह तुम्हारे आगे अपने सिरों को हिला–हिला कर कहेंगे: 'अच्छा तो वह कब होगा?' कह दो: 'कदाचित् कि वह निकट ही है।" (कुरआन 17:49–51)।

"ऐ लोगो! यदि तुम्हें दोबारा जी उठने के विषय में कोई संदेह हो तो देखो, हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर लोथड़े, फिर माँस की बोटी से जो बनावट में पूर्ण दशा में भी होती है और अपूर्ण

दशा में भी, ताकि हम तुम पर स्पष्ट कर दें और हम जिसे चाहते हैं एक नियमित समय तक गर्भाशय में ठहराए रखते हैं। फिर तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकाल लाते हैं। फिर (तुम्हारा पालन–पोषण होता है) ताकि तुम अपनी युवावस्था को प्राप्त हो और तुम में से कोई तो पहले मर जाता है और कोई बुढ़ापे की जीर्ण अवस्था की ओर फेर दिया जाता है परिणामस्वरूप बहुत कुछ जानने के पश्चात् भी वह बूढ़ा कुछ नहीं जानता। और तुम भूमि को देखते हो कि वह सूखी पड़ी है। फिर जहाँ हमने उस पर पानी बरसाया कि वह फबक उठी और वह उभर आई और उसने हर प्रकार की शोभायमान चीजें उगाईं। यह इसलिए कि ईश्वर ही सत्य है और वह मुर्दों को जीवित करता है और उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।" (कुरआन 22:5–6)

क्या उन्होंने देखा नहीं कि जिस ईश्वर ने आकाशों और धरती को पैदा किया और उनके पैदा करने से थका नहीं, क्या ऐसा नहीं कि वह मुर्दों को जीवित कर दे? क्यों नहीं, निश्चय ही उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है?" (कुरआन 46:33)

निष्कर्ष–

उपरोक्त चर्चा के प्रकाश में यदि थोड़ा भी बुद्धि विवेक से काम लिया जाए तो यह बात निर्णायक रूप से निकल कर आती है कि जिस प्रकार हमारे मालिक ने पहली बार हमें पैदा किया ठीक उसी प्रकार वह हमें पुनः पैदा करने का सामर्थ्य रखना है क्योंकि किसी भी वस्तु को पहली बार का बनाना मुश्किल काम होता है बाद में तो जितनी बार चाहो बना लो।

आइए अब दूसरे वर्ग की 'मृत्यु उपरान्त जीवन' की अवधारण का मूल्यांकन करें जो आवागमन के सिद्धान्त को सत्य मानते हुए अपने जीवन को गुज़ार रहा है।

आवागमन का सिद्धान्त

आवागमन के सिद्धान्त को मानने वाले यह धारणा रखते हैं कि हमारे कर्मों के अनुसार हमें इसी लोक में अलग-अलग योनियों में पैदा किया जाता है। और इस सिद्धान्त को 'पुनर्जन्म' के नाम से याद करते हैं। जबकि वास्तविकता तो यह है कि 'पुनर्जन्म' दो शब्द से मिलकर बना है (1) पुनः (2) जन्म।

'पुनः' का मतलब 'दोबारा' होता है। ज्ञात रहे 'दोबारा' का अर्थ तीसरा या चौथा नहीं होता और न ही बार बार!!

'पुनर्जन्म का अर्थ हुआ 'दोबारा जन्म', न कि तीसरा या चौथा या बार-बार जन्म। बार-बार, हर बार के लिए बिल्कुल अलग ही परिभाषित शब्द होता है जिसे हम 'आवागमन' के नाम से जानते हैं। मैं समझता हूँ कि 'आवागमन' के स्थान पर 'पुनर्जन्म' के शब्द का प्रयोग करना हमारा कोई छोटा मोटा दोष नहीं है।

आइए, आवागमन के सिद्धान्त को मानने वाले लोग क्या-क्या धारणा रखते हैं उसे देखें:

1. कुछ लोगों का मानना है कि 'मनुष्य अपने कर्मानुसार इसी लोक में जानवर या वनस्पति श्रेणी में जन्म लेता है।'
2. कुछ और लोग यह मानते हैं कि 'हम नर्क या स्वर्ग में तो जाएंगे मगर हमारे हिस्से में कुछ पुण्य या पाप बचेगा तो ईश्वर हमें फिर इसी दुनिया में किसी भी जीव की श्रेणी में भेज देगा और फिर यही क्रम चलता रहेगा।'
3. कुछ लोग यह कहते हैं कि 'आवागमन के चक्र से कभी किसी को मुक्ति नहीं मिलेगी।'
4. कुछ लोग यह कहते हैं कि, 'नहीं, बार-बार जन्म लेते रहने से कभी तो पाप ख़त्म होंगे-फिर हम को मोक्ष प्राप्त हो जाएगा।'
5. कुछ अन्य लोग यह कहते हैं कि 'इंसान अपने बुरे कर्मों के बदले में कोई जानवर या वनस्पति नहीं बनेगा बल्कि वह इंसान

ही बनकर इसी लोक में पैदा होगा और अपना पाप पुण्य भुगतेगा।'

6. कुछ लोग यह भी मानते हैं कि 'मरने के बाद आत्मा कोई रूप धारण कर लेती है।'
7. अन्य कुछ लोग ऐसे भी मिलेंगे जो कहते होंगे कि 'हम तो मध्यवर्ति काल को मानते हैं जो एक साल से सौ साल के बीच का होता है।'

प्रिय पाठको! यह मान्यताएं तो वह हैं जो मुझे मेरे सत्य प्रचार के दौरान मिलीं, हो सकता है ऐसी और बहुत सी मान्यताएं हों मगर हर मान्यता का एक ही ध्येय (लक्ष्य) है, और वह 'बार-बार का जन्म' अर्थात् 'आवागमन'।

आइए 'आवागमन' सिद्धान्त का बुद्धि-विवेक व शास्त्रों के आधार पर विवेचनात्मक मूल्यांकन करें।

सबसे पहले यह ज्ञात रहे कि सत्य एक होता है और झूठ कई प्रकार का होता है। 'पुनः जन्म' की आस्था सब ईशग्रन्थों में एक प्रकार की है चाहे वह वेदों में हो या बाईबिल में या फिर कुरआन में, लेकिन 'आवागमन' में आस्था कई प्रकार से दिखाई जाती है, जिससे मालूम होता है कि 'पुनः जन्म' का सिद्धान्त सही है और 'आवागमन' का सिद्धान्त गलत।

1. कर्म योनी व भोग योनी

'कर्म योनी' वह योनी होती है जहां हमें कर्म करने होते हैं। 'भोग योनी' वह योनी होती है जहां हमें हमारे कर्म अनुसार भोग भोगना होता है।

हिन्दू पौराणिक विधान के अनुसार मनुष्य योनि 'कर्म व भोग दोनों योनी' हैं 'अर्थात मनुष्य को केवल इसी योनी में कर्म करने होते हैं और साथ ही साथ उसे अपने पिछले कर्मों का फल भी भोगना होता है। जबकि 'जानवर व वनस्पति योनी' केवल भोग योनी होती है, वहां कोई कर्म नहीं होता अर्थात जानवर तो केवल

इसलिए जानवर है क्योंकि पहले वे मनुष्य योनी में कुछ ऐसे कर्म करके आया था कि अब वह जानवर बना दिया गया।

हम हमारे शास्त्रों ने व विज्ञान ने बताया कि समय के प्रारम्भ में इस धरती पर कुछ नहीं था यह धरती सूर्य का एक अंग थी फिर वह अंग अलग होकर सूर्य के चारों और चक्कर काटने लगा फिर अन्दर आज भी भीषण अग्नि है। उस ठण्डे हिस्से को भूपृष्ठ या भूपटल कहते है जिस पर हम रहते हैं इस भूपटल के ठण्डा होने के बहुत लम्बे अन्तराल के बाद, इस पर पानी बरसा, फिर भिन्न-भिन्न प्रकार की वनस्पति उगी, फिर एक और लम्बी अवधि के उपरान्त, जानवर आए फिर वनस्पति व जानवरों के दीर्घावधि के बाद मनुष्य का जन्म हुआ। यह पूरी कार्यप्रणाली का एक ज्ञात सत्य है। अगर इस पूरी प्रणाली को देखें तो हमें पता चलता है कि (क) पहले पहल इस धरती का कुछ भी नहीं था, (ख) फिर पानी बरसा और पेड़ पौधे उगे जो कि केवल भोग योनी है, (ग) फिर एक दीर्घावधि गुज़र जाने के बाद जानवर इस धरती पर आए यह भी भोग योनी है, (घ) जानवरों की दीर्घावधि उपरान्त भूपटल पर हम मनुष्य आए, जोकि भोग व कर्म योनि है। अगर हम इस पूरी कार्यप्रणाली का चित्रांकन संक्षिप्त में करें तो हमें ज्ञात होगा कि:

पहले धरती पर कुछ नहीं था

↓ लम्बे अन्तराल पर ↓

पेड़ पौधे, वनस्पति उगे → - भोग योनी

↓ फिर लम्बे अन्तराल पर ↓

जानवर आए → - भोग योनी

↓ फिर दीर्घावधि उपरान्त ↓

मनुष्य आए → - कर्म योनी

अब प्रश्न जो हर चिन्तन करने वाले की बुद्धि में आएगा वह यह कि ऊपर उद्धरित तथ्य में भोग योनियां तो पहले आईं और कर्म योनि बाद में!! ऐसे कैसे सम्भव है? होना तो यह चाहिए था कि पहले मनुष्य आता वह कर्म करता फिर अपने कर्मों के भोग भोगता परन्तु ऐसा हुआ नहीं पहले ईश्वर ने एक नहीं दो-दो भोग योनियाँ रखीं और बाद में मनुष्य को भेजा क्योंकि हमारा मालिक सर्वज्ञाता है। उसे मालूम था कि कुछ लोग 'आवागमन' के सिद्धान्त में फंसकर अपना 'मृत्यु उपरान्त' अनन्त जीवन, जो उन्हें ईश्वर के पास प्राप्त होना था, उसे सदा के लिए नर्क में प्रवेश पाकर नष्ट कर लेंगे। हमारे अती कृपालु ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति के अन्तःकरण में चेतना रखी है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम स्वयं अपने विवेक से निर्णय करें कि क्या सत्य है। भोग योनी, कर्म योनी से पहले नहीं आ सकती। अवश्य ही वनस्पति, जानवर व मनुष्य ईश्वर की अलग रचनाएं हैं और हर किसी का अस्तित्व तो एक दूसरे पर निर्भर करता है मगर सब एक दूसर के भोग का परिणाम हैं, यह सिद्धान्त कोई भी विवेकी, बुद्धि-सम्पन्न व्यक्ति भ्रान्तिपूर्ण, अनैतिक व अधर्म सिद्ध कर देगा।

2. न्यायपराणता के सिद्धान्त

(क). न्यायपरायणता का एक बहु ही महत्वपूर्ण सिद्धान्त है जिसको जानने के लिए किसी कानून की किताब या संविधान पढ़ने की जरूरत नहीं होती बस वह सिद्धान्त तो हर किसी के अन्तःकरण के द्वारा भी जाना जा सकता है, और वह सिद्धान्त है कि किसी भी अपराध का दण्ड देते समय अपराधी को उसके अपराध के बारे में बताया जाय अगर पुलिस किसी को जेल में बन्द कर दे और अपराध न बताया जाय तो हर कोई यही कहेगा कि 'यह तो जुल्म है', 'यह तो मानव अधिकार का दमन व अत्याचार है।' अब ज़रा विचार करो आवागमन के सिद्धान्त पर आज जितने भी लोग इस दुनिया में बीमार हैं, ग़रीब हैं, परेशान-हाल हैं, जिनका किसी ने दमन कर रखा है इत्यादि इन सबको तो आवागमन के सिद्धान्त के अनुसार दण्ड मिल रहा है

कि जबकि इनमें से किसी को भी अपना अपराध पता नहीं है। जबकि न्यायपरायणता तो यह थी इन सबको अपना अपराध मालूम होना चाहिए था। ज्ञात रहे कि हम सब चाहे किसी भी धर्म के हों यह विश्वास रखते हैं कि ईश्वर से बड़ा न्यायकारी कोई नहीं हो सकता और ईश्वर पर हमने आवागमन में श्रद्धा रखकर यह आरोप भी लगा दिया कि ईश्वर ही किसी के साथ अत्याचार करता है!!

(ख). अपराध पता होना पर्याप्त नहीं होता है न्यायपरायणता का सिद्धान्त यह भी कहता है कि अपराध पता होना ही पर्याप्त नहीं होता बल्कि उस अपराधी का खुली अदालत में मुकदमा भी चलना चाहिए। अगर अपराध पता भी चल जाय और मुकदमा न चले और दण्ड मिल जाय तो यह अत्याचार कहा व माना जाएगा। जब तक कि खुली अदालत में मुकदमा न चले, किसी को भी सज़ा देना अत्याचार है। अगर ग़रीबों को, परेशानहाल लोगों को, बीमारों को अपना अपराध भी मालूम हो जाय तब भी उनके अपराध को खुली अदालत में प्रमाणित करना आवश्यक है वरना दण्ड देना अत्याचार है और विडम्बना तो यह है कि सबसे बड़े न्यायाधिपति, न्यायमूर्ति अर्थात् ईश्वर पर ही अत्याचारी होने का आरोप लगा दिया!!

(ग). अपराधी की सहायता स्वयं में अपराध है यह न्याय का एक और महत्वपूर्ण सिद्धान्त है कि किसी ने अपराध किया, फिर खुली अदालत में उसका मुकदमा भी चला और उसका अपराध सूर्य के प्रकाश की तरह प्रमाणित हो गया और फिर उसके बाद उसे दण्ड भी दिया गया। अब उस दण्ड के दौरान कोई भी हस्तक्षेप करे और कहे कि 'नहीं, यह व्यक्ति बुरा कदापि नहीं था। केवल इससे गलती हो गई अब ऐसा कभी नहीं करेगा', और यह कह कर अगर उसने कानून के विरूद्ध उसकी सहायता करने की चेष्टा की तो वह भी उसी स्तर का अपराधी ठहराया जाएगा जिस स्तर का वह अपराधी था। अब ज़रा इस बात पर भी विचार करो कि आवागमन के सिद्धान्त के अनुसार अगर वह सारे ग़रीब,

परेशान-हाल व बीमार ईश्वर की दृष्टि में अपराधी हैं और उनका अपराध भी प्रमाणित हो चुका है तो इन सब की किसी भी तरह सहायता करना अपने आप में स्वयं अपराध होगा और हम भी अपराधी प्रमाणित हो जाएंगे। जबकि कोई भी धर्म या मत नहीं सिखाता कि ग़रीबों की, परेशान-हाल की, किसी बिमार की सहायता न करो और जब हमने आवागमन पर विश्वास कर ही लिया तो अब भी हमे कोई परेशानी या दुख आए तो न तो चिल्लाना ही चाहिए और न ही कोई कोर्ट-कचहरी अथवा पुलिस स्टेशन जाना चाहिए क्योंकि हमें तो हमारे पिछले जन्मों के कर्मों का परिणाम मिल रहा है अर्थात् यह कोर्ट-कचहरी, पुलिस, सुरक्षा बल ख़त्म कर देना चाहिए क्योंकि हमारे साथ जो कुछ भी बुरा हो रहा है वह हमारे पिछले जन्म के कुकर्मों का परिणाम है इसलिए हमें और आपको सारे दुख मुहबंद करके सहन कर लेना चाहिए, चाहे कोई कैसा भी अत्याचार करे। इसके अतिरिक्त एक और महत्वपूर्ण तथ्य वह यह कि न तो हमें किसी के दुख में परेशानी में सहायता करनी चाहिए और न ही किसी को हमारी परेशानी में सहायता करनी चाहिए क्योंकि सहायता करने पर हम सब ईश्वर के अपराधी प्रमाणित हो जाएंगे अर्थात् इस दृष्टिकोण से भी यह सिद्ध होता है कि हमारे मालिक ने आवागमन का सिद्धान्त नहीं दिया था बल्कि पुनः जन्म का सिद्धान्त दिया, जिसके अनुसार हमें इस लोक से मृत्यु उपरान्त ईश्वर के दरबार में जाना होगा (क़ुरआन 6:51) वहाँ हर व्यक्ति को अपना स्वयं हिसाब किताब देना होगा, कोई उसकी मदद को न आएगा (क़ुरआन 40:18–20, 82:17–19)

3. विभिन्न युग व जनसंख्या

हिन्दू पौराणिक मान्यता के अनुसार समय चक्रीय है। समय को चार विभिन्न युगों में बांटा गया है। 1. सतयुग : जहाँ चारों ओर सत्य ही सत्य था, बुराई लेशमात्र को भी नहीं थी। फिर 2. त्रेतायुग: जिसमे तीन हिस्से सत्य रहा और एक हिस्सा बुराई। 3. द्वापरयुग : जिसमें बुराई बराबर दो हिस्सों में बट गई। फिर 4. कलयुग आया

(जो कि आज भी चल रहा है) जिसमें बुराई ही बुराई थी और आज भी है।

प्रिय पाठको! जब से मनुष्य पृथ्वी पर आया है, लगातार बुराई बढ़ रही है। जबकि आवागमन के सिद्धान्त के अनुसार बुराई बढ़ने पर मानव जनसंख्या हर हाल में कम होनी चाहिए थी जबकि ऐसा हुआ नहीं और न ही अब ऐसा हो रहा है। इसका मतलब आवागमन का सिद्धान्त गलत है। अच्छे कर्म करो तो खाने को कम मिलेगा जिस मालिक ने हमें पैदा किया उसने चाहा कि हम अच्छे कर्म करें। आवागमन के सिद्धान्त अनुसार पृथ्वी पर लोग पुण्य करने लग जाएं तो धरती से पेड़ पौधे व जानवरों की संख्या कम हो जाएगी और मनुष्यों को खाने को कम मिलेगा अर्थात् दूसरे शब्दों में जब हम अपने मालिक की मर्ज़ी अनुसार कर्म करेंगे तो हमे खाने के लाले पड़ जाएंगे और इसके विरूद्ध अगर हमने ईश्वर की बातों का उल्लंघन किया तो हर तरफ़ चारों और भिन्न-भिन्न प्रकार के पेड़ होंगे, जानवर होंगे और हमारे खाने व आराम में कोई कमी नहीं होगी। अर्थात पुण्य के कर्म किये तो भूखे मर गये और पाप कर्म बढ़ाए तो जीवन में सुख-समृद्धि बढ़ जायेगी!!! मेरे भाईयों व बहनो! क्या कोई भी बुद्धि सम्पन्न व विवेकीय व्यक्ति ऊपर दी गई बात को पचा सकेगा?

4. आवागमन में श्रद्धा रखने में जोखिम ज़्यादा

यह बात ध्यान देने योग्य है कि यदि ईश्वर के यहाँ मृत्यु उपरांत हिसाब किताब देने खड़ा होना है, 'इस जीवन के तदोपरान्त और अवसर नहीं मिलेगा' वाली आस्था सत्य है मगर हम जीवन भर आवागमन में श्रद्धा रखे रहें तो अपने मालिक से भेंट पर क्या हाल होगा क्या ईश्वर हमारी इस बात से नाराज़ नहीं होगा कि हमने उसकी बात न मानी और दूसरे लोगों की इच्छाजनित धारणा को मान लिया? क्या हमारे इस अपराध पर हमें अनन्त काल के लिए नर्क में न डाल दिया जाएगा?

इसके विरूद्ध मान लो कि आवागमन का सिद्धान्त सत्य था,

जीवन भर हम 'पुनः जन्म' को ही श्रद्धापूर्वक मानते रहे तो हमारी मृत्यु उपरान्त हम दोषी ठहराए जाएंगे क्योंकि हमने आवागमन के सिद्धान्त को नहीं माना था जबकि वह सत्य था इसलिए हमें अपराधी बनाकर इस लोक में भेज दिया जाएगा ताकि हम अपनी गलती का सुधार कर लें।

ऊपर दिए गए तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह बात साफ़ समझ में आती है कि आवागमन सिद्धान्त को मानकर पुनः जन्म को ठुकराना एक ऐसा जोखिम भरा क़दम है जो कोई भी समझदार व्यक्ति उठाना नहीं चाहेगा। आप भी नहीं और मैं भी नहीं।

और अन्तिम बात-मृतक के सामने गरूड़ पुराण का पाठ

हिन्दू धर्म विधिनुसार ब्राह्मण शव के सामने बैठकर गरूड़ पुराण के 'प्रेतकल्प' का पाठ संस्कृत भाषा में करते हैं। सामान्यतः हमने और आपने कभी गरूड़ पुराण का स्वयं अध्ययन नहीं किया होता है। इस प्रेत कल्प में ब्राह्मण मृतक के शव के सामने बैठकर संस्कृत भाषा में श्लोकों का पाठ करते हैं जिसमें वह शव को संबोधित करके कहते हैं कि 'हे मृतक! हिसाब किताब में चित्रगुप्त से कभी गलती नहीं होती' (गरूड़-पुराण, प्रेतकल्प 14:11), 'पापियों का दण्ड मरने से कुछ क्षण पहले ही आरम्भ हो जाता है' (प्रेतकल्प 1:25, 26, 27)

'यमदूत पापियों की आत्मा को नर्क के वृतांत सुनाकर डराते है' (प्रेतकल्प 1:33–42)

'यमदूत कहते हैं कि मरने वाले, तूने संसार में पुण्य कर्म क्यों नहीं किए, क्या तुझे पता नहीं था तुझे मरकर यहाँ आना है'? (प्रेतकल्प-2:48–49)

'हर कर्म का रिकार्ड रखा जाता है' (प्रेत कल्प- 3:11–12), 'पुरस्कार व दण्ड मिलना अनिवार्य है' (प्रेतकल्प 3:13–15), 'नर्क के दरोगा से भेंट' (प्रेतकल्प 3:5)

'मरणोपरान्त हिसाब-किताब में सब के साथ एक सा बर्ताव'

(प्रेतकल्प- 3:28)

'दण्ड में किसी को कोई सहायता नहीं मिलेगी' (प्रेतकल्प 3:35)

'नर्क से पहले भी कर्म अनुसार दण्ड मिलेगा' (प्रेतकल्प- 3:31–65)

'हे मृतक! यमपुरी में 84 लाख नर्क हैं, जिनमें 21 मुख्य नर्क हैं।' (प्रेतकल्प 3:60)

'पापों की सूची' (प्रेतकल्प- 4:6–60)

'वैदोक्त यज्ञों के अतिरिक्त अपने पेट के लिए पशु मार-मार कर माँस खाने से वैतरणी नदी में निवास मिलता है' (प्रेतकल्प- 4:20), हर कोई-धर्मराज अर्थात ईश्वर की ही उपासना करता है।' (प्रेतकल्प- 14:38–41)

'स्वर्ग का वृतान्त' व उसमें मिलने वाली सुख सामग्री। (प्रेतकल्प- 14:50–86)

'पिण्ड-दान, श्राद्ध आदि जो कि पुत्र इत्यादि द्वारा किया गया हो, वह भी पाप आत्माओं को किसी प्रकार का सुख नहीं पहुँचा सकते।' (प्रेतकल्प- 1:43–44)

ऊपर दिए सारे श्लोकों को देखकर क्या आपको ऐसा नहीं लगा कि यह तो हमारे जीवन के साथ एक बहुत बड़ा घोटाला व अनैतिक कार्य हो रहा है। उपर्युक्त बातें तो जीवित व्यक्तियों को बतलाने की हैं, न कि मृतक के शव के सामने पाठ करने की! अगर जीवित को यह सब बताया जाता तो उस व्यक्ति का भी उद्धार होता और समाज का भी। ज्ञात रहे कि संसार का कोई भी संविधान या कानून किसी भी व्यक्ति को कोई भी अपराध करने से नहीं रोक सकता मगर पारलौकिक जीवन में आस्था व दण्ड पुरस्कार और स्वर्ग नर्क में विश्वास हर व्यक्ति को सूक्ष्म से सूक्ष्म कुकर्म करने से रोकने की पूरी क्षमता रखता है और समाज में सुकर्मों को बढ़ाने के लिए बड़े से बड़े बलिदान देने के लिए प्रेरित करता है।

कुछ भ्रान्तियाँ व उनका विवेचनात्मक मूल्यांकन

हमारे कुछ भाईयों/बहिनों में पारलौकिक जीवन को लेकर कुछ भ्रान्तियाँ होती हैं, जिनका निवारण अति आवश्यक है।

1. छोटे बच्चों को तकलीफ़ व यातनाएं क्यों?

कुछ लोग कहते हैं कि एक बच्चा दुनिया में पैदा हुआ तो उसको बहुत से कष्ट होते हैं जैसे वह बीमार पड़ जाता है, लक़वा मार जाता है या फिर कुछ तकलीफ जन्म से ही होती है। अब ऐसे में उस निर्दोष, निष्पाप बच्चे को दुख क्यों पहुंचा जबकि उसने अभी तो किसी को परेशान भी नहीं किया और न ही अपने जीवन में कोई ग़लती की तो उस अबोध बालक/बालिका को दण्ड क्यों मिले? जो ऊपर दी स्थिती में आस्था रखते हैं वह कहते हैं कि 'आवागमन से इसका उत्तर मिलता है।'

प्रिय पाठको! वास्तव में हमारा यह जीवन एक परीक्षा है हमारे अति कृपालु मालिक ने हमें सिर्फ़ इसलिए पैदा किया है ताकि हम उसके सामने पूर्ण रूप से समर्पण कर दें। अंतिम ईशवाणी कुरआन ने हमें लक्ष्य बताया है-

1. "मैंने तो (अर्थात ईश्वर ने) जिन्नों व मनुष्य को केवल इसलिए पैदा किया है ताकि वे मेरे आदेशों को माने, मैं उनसे कोई जीविका नहीं चाहता और न ही यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाएँ।" (कुरआन 51:56–57)

2. "जिसने (ईश्वर ने) पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुम में कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।" (कुरआन 67:02)

3. "धरती पर जो कुछ भी है तो हमने (अर्थात ईश्वर ने) उसकी शोभा बनाई है, ताकि वह उसकी परीक्षा ले कि उनमें कर्म की दृष्टि से कौन उत्तम है" (कुरआन 18:7)

4. "क्या मनुष्य पर् काल-खण्ड को ऐसा समय भी बीता है कि वह ऐसी चीज़ न था जिसका उल्लेख किया जाता है? हमने मनुष्य को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया, उसे उलटते पलटते रहे, फिर हमने उसे सुनने व देखने वाला बना दिया। हमने उसे मार्ग दिखाया, अब चाहे वह कृतज्ञ बने या अकृतज्ञ" (कुरआन 76:1–3)

ऊपर दिए अन्तिम वेद 'कुरआन' के मन्त्रों से पता चला कि ईश्वर ने मनुष्यों को केवल जीवन इसलिए दिया है ताकि हमारी परीक्षा हो सके कि कर्म की दृष्टि से उत्तम कौन है? हम सबको ज्ञात है कि जब किसी की परीक्षा होती है तो उसकी किसी वस्तु के विरूद्ध ही परीक्षा ली जाती है। इस प्रकार हमारा सर्वज्ञाता मालिक हमारी परीक्षा हमारे तन, मन, धन से लेता है।

अबोध बच्चे वास्तव में अभी अपनी निर्णायक अवस्था में नहीं पहुँचे होते, इसलिए उनके द्वारा दूसरों की, उनके माता पिता की परीक्षा ली जाती है। इस प्रकार पागल दिवालिया व विक्षिप्त व्यक्ति की भी परीक्षा नहीं होती बल्कि उसके द्वारा दूसरों की, उसके सगे सम्बन्धियों की परीक्षा चल रही होती है। रहा इस बात का प्रश्न कि उन बच्चों को कष्ट के बदले क्या मिला या क्या मिलेगा तो मेरे भाईयो/बहिनो हमारा मालिक कुछ भी भूलता नहीं है (कुरआन 82:10–12) ईश्वर के दरबार में उन अबोध बालकों/बालिकाओं को पूरा पूरा बदला दे दिया जाएगा और उन लोगों को भी पूर्ण रूप से बदला दिया जाएगा जो इस परीक्षा में सर्वथा सफल हो गए होंगे। ठीक इसी प्रकार पागल व विक्षिप्त व्यक्तियों को भी पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और कण बराबर भी किसी पर अत्याचार न किया जाएगा। इसलिए यह समझना कि छोटे बालकों को कष्ट उनके पिछले जन्म व कर्मों के कारण हो रहे हैं सरासर भ्रान्तिपूर्ण व अनुचित है।

2. बच्चों का पुनर्जन्म

इसके अलावा कुछ लोग यह भी कहते सुने जाते हैं कि हमारे

गांव में एक बच्चा है और वह अपने पिछले जन्म के बारे में बता रहा है उसने बताया कि पिछले जन्म में वह किसका बेटा था, क्या था, कहाँ रहता था, उसका घर कैसा था इत्यादि। अब इस बात को लेकर ऐसे लोग आवागमन को सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। यहां यह ज्ञात रहे कि ऐसा दावा करने वाले केवल हिन्दु ही नहीं होते वरन् मुसलमानों/ईसाइयों इत्यादि में भी ऐसा दावा करने वाले मिल जाते हैं। अब यह प्रश्न उठता है कि ऐसे कैसे हो जाता है? यह बात तो अपने आप में बिल्कुल ठीक है कि ऐसा कभी-कभी होता है कि एक बच्चा कुछ बता रहा होता है और जब उसे सत्यापित किया जाता है तो वह सत्य भी निकलता है, तो यह कैसे होता है?

एक तो इस बारे में यह आप अपने मसितष्क से निकाल दें कि ऐसा सदैव होता है। अगर सदैव आवागमन के सिद्धान्त पर ही हो रहा होता है तो फिर इसे सदैव होना चाहिए और सिर्फ़ हिन्दूस्तान में ही नहीं वरन् पूरे विश्व में व्यापक रूप से होना चाहिए परन्तु ऐसा होता नहीं है। दूसरे जब भी इस प्रकार की घटनाओं पर शोध किया जाता है तो पता चलता है कि अधिकतर घटनाएँ सत्य नहीं है। परन्तु लाखो घटनाओं में से एकाद प्रमाणित भी हो जाती हैं। वह कैसे सत्य हुई, हमें इस पर ध्यान देना चाहिए।

कुछ शैतानी (राक्षसी) शक्तियाँ जिनकी आयु बहुत लम्बी होती हैं, किसी पहले मरे हुए व्यक्ति के बारे में किसी बच्चे के मस्तिष्क को नियन्त्रित करके कुछ बाते बताते हैं और जब हम उन बातों का विश्लेषण करते हैं तो वह सत्य प्रमाणित हो जाती हैं। इस जादू की एक बहुत ही महत्वपूर्ण विशेषता है, वो यह कि 'नियन्त्रित शैतानी शक्तियां' केवल पाँच वर्ष या इससे कम के आयु के बच्चे को ही किसी और व्यक्ति का वृतान्त बता पाती हैं। अर्थात् यह 'हज़रात का अमल या जादू' केवल पाँच वर्ष के बच्चे के साथ ही सम्भव है और होता भी ऐसा ही है अभी तक जितनी भी 'पुर्नजन्म' घटनाएं

मिली हैं, उन सब में पाँच वर्ष से कम के बच्चे सम्मिलित होते हैं। वह बच्चा जो अपने पिछले जन्म के बारे में बड़े भोलेपन के साथ बता रहा था जैसे ही पाँच वर्ष का होता है तत्काल ही उन सब घटनाओं के बारे में भूल जाता है। क्यों भूल गया वह? क्योंकि अब उस पर वह 'हज़रात का जादू' काम नहीं कर सकता इस पर कुछ लोग कहते हैं कि यह तो भूलने कि प्राकृतिक प्रक्रिया है सब लोग ही भूलते हैं, बात यह नहीं है वास्तव में, बात ध्यान देने योग्य यह है कि हर घटना में पाँच वर्ष से कम का अबोध बालक क्यों है? और फिर हर घटना में जब वह बालक या बालिका पाँच वर्ष से अधिक हो जाता है तो वह अपने पिछले जन्म जैसे महत्वपूर्ण घटना कैसे भूल जाता है? यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि हम और आप अपने बचपन की कोई भी महत्वपूर्ण घटना कैसे भूल जाते हैं? यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि हम और आप अपने बचपन की कोई भी महत्वपूर्ण घटना आज तक नहीं भूले। यह प्रसंग तो पिछले जन्म का था। जिस बालक को अपने पिछले जन्म की घटनाएं याद हों वह इतनी सरलता से, केवल पाँच वर्ष पूरे होते ही, सब कुछ भूल गया है। ऐसा कैसे सम्भव है? उसे तो हर बात स्थाई रूप से स्मरण करनी चाहिए। परन्तु नहीं स्मरण रह पाती। कारण? क्योंकि वह 'हज़रात के जादू' के प्रभाव से बाहर निकल आया है, अब आप उससे लाख पूछें, लालच दें, वह अबोध बालक या बालिका 'पिछले जन्म' के बारे में कुछ नहीं बता सकता।

3. निष्कर्ष

वह कुछ भ्रान्तियां थीं जिनके चलते हमें 'आवागमन' व पारलौकिक जीवन में क्या सत्य है? के बारे में पता करने में कठिनाई होती थी परन्तु अब हमारे विचार से ऐसा कोई भी पक्ष या दृष्टिकोण नहीं रह गया है। अब आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम सब अपनी बुद्धि विवेक से काम लें और मृत्यु उपरान्त अपना अनन्त पारलौकिक जीवन स्वयं अपने हाथों नष्ट न करें।

वेदों में पारलौकिक जीवन

'परलोकवाद' की धार्मिक आस्था इस दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है कि समस्त धर्मों एवं जातियों में अनेक बड़े सम्प्रदाय ऐसे हैं जो 'ऐकेश्वरवादी' हैं। अन्तिम दिन, पुनरोत्थान, पुरस्कार व दण्ड तथा स्वर्ग नर्क का वर्णन विशुद्ध रूप से वेदों में वर्णित एवं संग्रहित है। आवागमन का मत हमारे हिन्दू समाज में बहुत बाद के समय में आया। यद्यपि ऐसे संकेत मिलते हैं कि वैदिक युग में नगण्य लोग आवागमन के मानने वाले थे, लेकिन एक पूरे का पूरा समुदाय जन्म जन्मांतर की कहानी को सत्य मानने लगे, ऐसा बहुत बाद में हुआ किसी साधारण हिन्दु से ज्ञात कीजिए कि यदि पुरस्कार-दण्ड स्वरूप बार-बार इसी संसार में जन्म लेना है तो धार्मिक ग्रन्थों में स्वर्ग-नर्क, परलोक एवं यमदूत का क्या औचित्य है? अनेक हिन्दू विद्वान भी इस प्रश्न पर बेतुके तर्क प्रस्तुत करते हैं। वास्तविकता यह है कि वेदों से पूर्ण रूप से कट जाने के कारण पारलौकिक जीवन की धारणा में बिगाड़ आया। आवागमन के विषय में महत्वपूर्ण शब्द, 'पुनर्जन्म' ही बार-बार जन्म लेने की बात को नकारता है।

आइए, अब वेदों में स्वयं अन्तिम दिन और स्वर्ग नर्क का वर्णन देखिए।

1. वेदों में पारलौकिक जीवन की परिकल्पना

'हे अग्नि! अपनी मुक्ति दिलाने वाली शक्तियों से पुण्य-लोक की प्राप्ति कराओ' (ऋग्वेद- 10:16:4)

'हे अग्नि! इस मृत व्यक्ति को जीवन मिलेगा' (ऋग्वेद- 10:16:4)

वेदों में परलोक की कल्पना के यह दो उदाहरण हैं, बार-बार जन्म न होकर केवल एक बार दोबारा जन्म लेने का वृतान्त, परलोक के लिए वेदों में जगह-जगह आया है।

2. वेदों में स्वर्ग का वृतान्त

'तुम वहाँ अपनी सत्यता की सहायता से उस स्थान को देखना जो अत्यन्त विस्तृत दृश्यों वाला है।' (ऋग्वेद 1:21:6)

ग्रिफिथ के अंग्रेजी अनुवाद में लिखा है कि सायणाचार्य की व्याख्या के अनुसार यह स्थान स्वर्ग है।

'तुम दोनों पति पत्नी मेरे पास पंक्तिबद्ध होकर खड़े हो जाओ, सच्चे भक्त इस स्वर्ग की दुनिया में पहुंच जाते हैं।' (अथर्ववेद- 6:122:3)

'तुम्हारे अनुयायी अपने दान पुण्य के द्वारा ईश्वर की सेवा करेंगे और इसके अतिरिक्त तुम स्वर्ग की प्रसन्नताओं से आलंगित होगे।' (ऋग्वेद 10:95:18)

'जो ज्ञान रखते हैं, वे दूसरों से पहले जीवन प्रदान करने वाली श्वास लेकर इस शरीर से निकल कर आकाश में पहुंचकर अपने समस्त साथियों के साथ रहते हैं। जिन मार्गों से देवताओं ने यात्रा की थी, वह उनसे यात्रा करते हुए स्वर्ग पहुंच जाते हैं। (अथर्ववेद- 2:34:5)

'पवित्र करने वाले के द्वारा पवित्र होकर ऐसे शरीर के साथ जिसमें अस्थियां न होंगी, वे प्रतापवान और प्रज्वलित होकर प्रकाश के संसार में पहुंचते हैं। उनके उल्लासित शरीर को आग नहीं जलाती है। स्वर्ग लोक में उनके लिए बड़ा आनन्द है।' (अथर्ववेद ४:३४:२)

'शहद के किनारों और मक्खन से बनी नहरें जो मदिरा, दूध, दही और पानी से भरी होंगी, उनसे अत्यन्त मिठास उबली पड़ती होगी। यह झरने स्वर्ग लोक में तुम तक पहुंचेंगें। कँवल से भरी पूरी-पूरी झीलें तुम्हारे पास आएंगी। (अथर्ववेद- 4:34:6)

यह थे स्वर्ग के पुरस्कर के विषय में वेदों में दिए गए कुछ वादे। आइए अब नर्क का वर्णन देखें।

3. नर्क का वर्णन

वेद से पहले श्रीमद्भागवत पुराण के चार श्लोकों का अनुवाद देखिए वहाँ उसके शरीर को धधकती हुई लकड़ियों आदि के बीच में डालकर जलाया जाता है, कहीं स्वयं और कहीं दूसरों के द्वारा काट-काट कर उसे अपना ही मांस खिलाया जाता है। (श्रीमद् भागवत पुराण- 3:30:25)

'यमपुरी (मौत की दुनिया) के कुत्तों अथवा गिद्धों द्वारा जीते जी उसकी आँतें खींची जाती हैं, सांप, बिच्छू और डसने वाले तथा डंक मारने वाले जीवों से शरीर को पीड़ा पहुंचायी जाती है।' (भगवत पुराण- 3:30:26)

'शरीर को काट कर, टुकड़े-टुकड़े किए जाते हैं, उसे हाथियों से चिरवाया जाता है पर्वत-शिखरों से गिराया जाता है अथवा जल या गढ़े में डाल कर बन्द किया जाता है।' यह सब यातनाएं तथा इसी प्रकार तमस एवं रौरव आदि नरकों की और भी अनके यातनाएं, स्त्री हो या पुरूष, उस जीव को पारस्परिक संसर्ग से होने वाले पाप के कारण भोगनी ही पड़ती हैं। (भागवत पुराण 3:30:27–28)

और अब ऋग्वेद से एक उदाहरण देखें-

जो पापी हैं, उनके लिए यह अथाह गहराई वाला स्थान अस्तित्व में आया है।' (ऋग्वेद- 4:5:5)

इस मन्त्र की व्याख्यात्मक टिप्पणी में वेदों के अंग्रेजी अनुवादक ग्रिफिथ ने लिखो है कि सायणाचार्य के अनुसार यह स्थान 'नर्क' है।

उपर्युक्त मन्त्रों व श्लोकों के अनुवादों को देखिए, क्या कहीं भी बार-बार विभिन्न शरीरों या योनियों में जन्म लेते रहने का वर्णन मिलता है? यह सब पढ़ने पर हो सकता है कि आपके मन में यह भ्रान्ति आ रही हो कि हमने आपके सामने केवल उन मन्त्रों का अनुवाद प्रस्तुत कर दिया है जिनमें परलोक और स्वर्ग-नर्क या

यथार्थ वर्णन विद्यमान है, मेरे भाईयों व बहनों ऐसा नहीं है, आप स्वयं वेदों की कोई प्रति (हाँ आपको थोड़ी बहुत संस्कृत अवश्य आना चाहिए) उठकर देख लें। आपको वेदों के किसी भी भाग में आवागमन की चर्चा नहीं मिलेगी।

उपर्युक्त वेद मन्त्रों के अनुवाद हमने सनातन धर्मी, आर्यसमाजी और ग्रिफिथ के अंग्रेजी अनुवादों को सामने रखकर किए हैं। और अब देखें पंडित दुर्गाशंकर सत्यार्थी के कुछ अनुवाद जो उन्होंने परलोक से सम्बन्धित अपने लेख में दिए हैं जो हिन्दी पत्रिका 'कान्ति 8 जुलाई 1969 के अंक में प्रकाशित हुए हैं-

'वह वज्र देने वाला, दस्युओं (शैतानों) को मारने वाला, हज़ारों भयंकर, उग्र (मनुष्यों) को चेतना देने वाला और सैकड़ों पर कृपा करने वाला है। चंवर (छत्र) वाला है, शवों को पाँच जन्म देने वाला नहीं है। हे हिन्दुओ! तुम सब बिजलियों के स्वामी हो। (ऋग्वेद-1:100:12)

'पुनः पुनः उत्पन्न होने का वर्णन 'ससान शुम्भ' (शैतान) जैसा प्राचीन काल (के लोगों द्वारा) किया जाता (रहा) है। पापियों समान इस प्रकार मानने वालों को विजित करो। मरने वालों की देवी आयु को जलाती है। (अर्थात् जल्दी करो, जीवन की अवधि समाप्त हो रही है), (ऋग्वेद- 1:92:10)

'वे अन्तिम दिन का विस्मरण कर विद्या एवं बुद्धि का तिरस्कार कर हमारी निश्चित की हुई सीमा को पकड़ रहे हैं (अर्थात फांद रहे हैं) (ऋग्वेद-1:4:3)

'अपने दिल (हृदय) के लिए मधुर जिह्वा प्राप्त कर लोग अपनी शंकाओं की गणना करते हैं। (अर्थात् अध्यात्म प्राप्त करके अपने पापों का स्वयं हिसाब-किताब करते हैं) देवों को नमस्कार करने वालों से कहो 'तुम्हें फिर से स्थाई आयु एवं सदा का जीवन प्राप्त होना निश्चित है।'

पंडित दुर्गा शंकर सत्यार्थी ने अपने लेख में ऊपर उद्धरित मन्त्रों के अतिरिक्त और बहुत से वेद मन्त्रों का उदाहरण देकर

बहुत तर्कपूर्ण शैली में यह सिद्ध किया है कि वेदों में परलोकवाद का मत अत्यन्त स्पष्ट तथा कुरआनी धर्म सिद्धान्त की तरह है, और क्यों न हो, ईश्वर ने समय के प्रारम्भ में वेदों को जल प्लावन वाले मनु (हज़रत नूह, उन पर शान्ति हो) पर अवतरित किया और समय के अंत में कुरआन को हज़रत मुहम्मद (उन पर शान्ति हो) पर अवतरित किया, तो पारलौकिक जीवन की अवधारणा भी एक ही होनी थी। वास्तविकता यह है कि जब-जब ईश्वर के धर्म की हानि हुई है तब-तब उसने अपने दूत भेजकर अपने धर्म को पुनर्जीवित करा है। अज्ञात काल पुराने वेदों में पारलौकिक जीवन की इन सूचनाओं का इनके हजारों लाखों साल बाद इससे मिलती-जुलती शैली में कुरआन में वर्णित होना, क्या इस बात को सिद्ध नहीं करता कि वेदों में ईशवाणी आज भी विद्यमान है? शाब्दिक और अर्थ सम्बन्धी क्षेपकों की यात्रा करते हुए, अज्ञात समय की धूल में खोए हुए वेदों को यदि कुछ विद्वान अन्तिम ईशवाणी कुरआन की सहायता से विशुद्ध करके हमको बताएं व समझाएं तो क्या पारलौकिक जीवन की तरफ आना सरल होगा, जिसको मानकर हम सब अपना अनन्त जीवन 'शान्ति के घर' में व्यतीत कर सकेंगे और अपने को व अपने परिवार वालों को अनन्त नर्क की आग से बचा लें, क्या हमको समझने में कोई कठिनाई आएगी कि वास्तविक सफलता यही है हमें नर्क की आग व उसके दण्ड से मुक्ति मिल जाए और स्वर्ग अर्थात् शान्ति के घर में उसके और बहुत सारे पुरस्कारों के साथ स्थान मिल जाए? यहाँ एक और महत्वपूर्ण बात हम बताना चाहते हैं कि ऊपर लिखे मन्त्र जिनको हमने पण्डित दुर्गा शंकर सत्यार्थी के लेख से उद्धरित किया है, जब उन्हें दूसरे अनुवादों में देखा तो पता चला कि सारे अनुवादों ने बिल्कुल एक दूसरे से भिन्न अनुवाद किए हैं, जिनके अभिप्राय तनिक भी आपस में मेल नहीं खाते। यह है अर्थ-सम्बन्धी क्षेपकों का एक और प्रमाणित उदाहरण। जब-जब अनुवादकों ने 'आकाशवाणी' की वास्तविकता से हटना चाहा और परलोक के सच्ची मान्यता को छिपाना चाहा तो उनमें आपस में भी

सहमति न रही और उन सभी ने अपनी-अपनी मन पसन्द व्याख्याएं कर लीं।

आवागमन की यथार्थता

वेदों और हिन्दू अनुसंधान कर्ताओं के जो उदाहरण हमने प्रस्तुत किए हैं उनसे यह तो बिल्कुल स्पष्ट है कि मूल हिन्दू धर्म में वर्तमान जीवन के बाद दूसरे अनन्तकालीन जीवन ही की धारणा थी, लेकिन फिर भी प्रत्येक मनगढ़न्त कहानी, देवमाला और असत्य व काल्पनिक मत का कोई आधार होता है। हमारे शोध के अनुसार आवागमन का मत भी आधारहीन नहीं है, बल्कि 'मुतशाबिहात' (अलंकृत शैली) की भाषा में वर्णित कुछ वास्तविकताओं को समय से पहले समझने के प्रयास में वास्तविक अभिप्राय कहीं गुम हो गया है और इस आवागमन की रोचक कहानी ने जन्म लिया। इस पहलु का विस्तृत वर्णन न करते हुए भी कुछ सीमा तक स्पष्टीकरण इसलिए आवश्यक है कि 'असत्य' को समझे बिना उस पर भरपूर प्रहार नहीं हो सकता। इस उपादेयता को दृष्टिगत करते हुए इन वास्तविकताओं में से केवल दो का ही लगभग 'मोहकमात' (सरल ज्ञान) की भाषा में वर्णन कर रहे हैं। जिनको न समझने के कारण आवागमन का तथाकथित धर्म विश्वास में आया। मानव शरीर में करोड़ो अरबों जीवित प्राणी मौजूद हैं। हमारे शरीर में जो रक्त प्रवाहित हो रहा है वह भी असंख्य लाल और सफेद कणों पर आधारित है। जो खाद्य पदार्थ हम सब्ज़ियों या मांस के रूप में लेते हैं, उसमें लाखों जीवाणु होते हैं। इनकी बड़ी संख्या पकाने के बाद भी भोजन में जीवित रहती है। दूध, अण्डा, शहद, या दूसरे खाद्य पदार्थों की भी यही स्थिति है। जो पानी हम पीते हैं, उसके माध्यम से भी हम प्रतिदिन लाखों करोड़ों जीवों को अपने शरीर में प्रविष्ट कराते हैं। यह समस्त आहार मानव शरीर के कारखाने में जाकर विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरता हुआ रक्त बनता है या मल, मूत्र, आँसू, पसीना इत्यादि के

रूप में बाहर निकल जाता है। पुरूष की पीठ में जो जीव कण इकट्ठा होते हैं जो स्त्री के देह में प्रविष्ट होकर, पोषण पाकर एक नए मानव का रूप धारण करता है। जो कण हमारे आँसुओं, या मल मूत्र आदि के रूप में शरीर से विसर्जित होते हैं, वे कही खाद्य में सम्मिलित होकर विभिन्न पेड़ पौधों के शरीर में पहुंच जाते हैं, वे वहीं से चौपायों के भोजन के रूप में इनके पेट में पहुंचते हैं। ऐसे जीवन कण भी होते हैं जो चौपायों के बच्चे के रूप में यह जीव कण बिखर जाते हैं। कहीं चींटियों, मक्खियों, कीड़ों मकोड़ों के आहार के रूप में उनके शरीर में प्रविष्ट होते हैं। बहुत से मांसाहारी पशु दूसरे पशुओं को खाते हैं। उदाहरणतया मांसभक्षी पशु जब चौपायों को खाते हैं तो यह कण उनके शरीर में स्थानान्तरित होते हैं। कुछ उनके बच्चों के रूप में निकल जाते हैं और कुछ मल-मूत्र के साथ विसर्जित होकर मिट्टी में मिलकर फिर पेड़ पौधों में पहुँच जाते हैं, उनके द्वारा फिर किसी और जगह किसी और मनुष्य के भोजन के रूप में उसके शरीर में स्थानान्तरित होते हैं। इस प्रकार यह एक असीमित और अन्तहीन जीवन का चक्र है जो महाप्रलय तक जारी रहेगा। जीव-कण विभिन्न रूपों, शरीरों से गुजरते हुए यात्रा करते हैं। यात्रा की व्यवस्था पर लाखों कणों में से केवल एक किसी मनुष्य, पशु या पेड़, पौधे के शरीर से गुज़रते हुए किसी और शरीर की ओर स्थानान्तरित होने की अपनी प्रक्रिया जारी रखते हैं, जब तक कि उनका गन्तव्य न आ जाय। यूँ समझिए कि पुरूष की पीठ से केवल एक जीव-कण स्त्री के गर्भाशय में दाखिल होकर बच्चे के रूप में प्रकट हुआ। यह कण अपनी मंजिल को पहुँच चुका, लेकन इसी मनुष्य के शरीर से निष्कासित होने वाले अन्य लाखों करोड़ों जीव-कण विभिन्न स्थानों पर विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होते हैं। इनके फोकस के द्वारा मिट्टी में मिलकर एक पेड़ में बहुत से कण पहुँचे। अब इनमें से केवल एक की मंजिल आई जो उस पौधे के रूप में प्रकट हुआ। अन्य सभी कण जो उस पौधे की पत्तियों और नाड़ियों में विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं, उनकी मन्जिल अभी नहीं

आई। मान लिजिए वह किसी बकरे का भोजन बनते हैं। अब बकरे में प्रविष्ट होने वाले जीवन-कणों में केवल किसी एक की मंजिल आई जो किसी बकरे के पेट में जाकर उसके बच्चे के रूप में प्रविष्ट हुए। यहां भी केवल एक की मंजिल आई, बाकी फिर कहीं और स्थानान्तरित हुए। बकरी का दूध पीने वाले इंसानों के शरीर में प्रवेश पाने वाले जीव कणों में से कुछ की मंजिल आई और अन्य कहीं उन मनुष्यों के मल-मूत्र के रूप में स्थानान्तरित हो गए। इस प्रकार यह क्रम चलता रहा है। यह आवागमन की एक वास्तविकता। जैसे हम किसी जगह यात्रा करने के लिए भांति-भांति की सवारियों को बदलते हैं, ट्रेन, टैक्सी और रिक्शा से होते हुए अपनी मंजिल पर पहुंचते हैं और उन सवारियों में से कोई भी हमारी मंजिल नहीं होती। इस प्रकार विभिन्न जीव कण विभिन्न सवारियों (प्राणियों) में से गुज़रते हुए अपने अन्तिम गन्तव्य पर पहुंचते हैं। पिछले सब पड़ाव उनके वाहन थे। जीवन-कण का विभिन्न प्रकार के पौधों, पशु-पक्षियों और मानव देह के रूप में प्रकट होना या उनके शरीरों से गुजरना ही 'आवागमन' है। कोई जीवन कण लाखों शरीरों से गुज़र कर अपनी मंजिल पाकर किसी रूप में प्रकट हो जाता है और न जाने कितनों ने आज तक अपनी मंजिल ही नहीं पाई।

सृष्टा की दृष्टि पर जितनी सूक्ष्मता से चिन्तन करें, उतना ही आश्चर्य अपनी चरम सीमा पर पहुंचता जाता है। और कुरआनी चेतावनियों का स्वर कानों में गूंजता है, "क्या तुम विचार नहीं करते?" "क्या फिर तुम चिन्तन नहीं करते?" "क्या फिर तुम दूरदर्शिता से नहीं सोचते?" "क्या फिर तुम ईश्वर को याद नहीं करते?" "क्या फिर तुम मन की आँख नहीं रखते?" "क्या फिर तुम विवेक नहीं रखते?"

जब सृष्टि के कुशल प्रबन्धक की तत्वदर्शितापूर्ण व्यवस्था के अनुरूप एक मनुष्य के रूप में जीव-कण ने अपनी मंजिल प्राप्त

कर ली तो उसकी यात्रा समाप्त हुई। अब इस मनुष्य को अपने मालिक के बताए हुए रास्ते पर जीवन बिताना है। उसकी मृत्यु पर आने वाले दूसरे जीवन में स्थायी पुरस्कार व दण्ड स्वरूप उस को किसी और प्राणी के रूप में इस संसार में जन्म नहीं लेना है। हां मनुष्य के शरीर से जो दूसरे जीवन में जीवधारी स्थानान्तरित हैं और उनकी यात्रा अभी समाप्त नहीं हुई है, वे अपने पड़ाव की ओर अग्रसर हैं। इसके उदाहरण सर्वप्रिय, चयनित ईशदूत, हज़रत मुहम्मद (उन पर ईश कृपा हो), के निम्नलिखित कथनों से समझें।

'हज़रत अबू हुरैरा (अन्तिम ईश दूत के एक सत्संगी) कहते हैं कि ईशदूत स० ने फरमाया कि मुझ को एक के बाद एक काल में आदम की सन्तान के सर्वश्रेष्ठ वर्गों में स्थानान्तरित किया जाता रहा, यहाँ तक कि मैं इस वर्तमान काल में पैदा किया गया।' (बुखारी शरीफ, अ० सय्यदुल मुर्सलीन)।

अर्थात् हज़रत मुहम्मद (उन पर शान्ति हो) के पवित्र जीवन का ज्योर्तिमय जीव-कण (नूरानी ज़र्रा) आदम (उन पर शान्ति हो) से लेकर आप (अर्थात हज़रत मुहम्मद) के शुभ जन्म तक हर चक्र के श्रेष्ठतम मानव शरीर से स्थानान्तरित होता हुआ अन्ततः आप (अर्थात हज़रत मुहम्मद) के पवित्र शरीर के रूप में प्रकट हुआ।

'जीव-कण हमारा अपना तय किया हुआ परिभाषित शब्द है।' इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है, लेकिन यह ध्यान रखिए कि विज्ञान का 'विकास का सिद्धान्त' और 'उत्पत्ति सम्बन्धि सिद्धान्त' दोनों अभी अपूर्ण हैं और स्वयं विज्ञान इनके मात्र दृष्टिकोण होने या अपूर्ण सिद्धान्त होने को स्वीकार करता है। पिछले पृष्ठों में हमने जो कुछ वर्णन किया है वह निम्नलिखित हदीसों (हज़रत मुहम्मद के कथन) पर आधारित है:

हजरत इब्ने अब्बास (अन्तिम ईश दूत के सत्संगी) का कथन है कि 'मक़ामे नोमान में अरफ़े के दिन आत्माओं से संकल्प लिया गया था और हज़रत आदम (उन पर शान्ति हो) की सुल्ब (पीठ) से निकाल कर कणों की तरह फैला दिया गया था और उन से यूँ

वार्तालाप हुई थी, 'बताओ क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं? सब आत्माएं कहने लगीं क्यों नहीं? अवश्य! (तफ़सीर इब्ने कसीर)।

"हजरत अत्तार रजि० फरमाते हैं कि मकामे नोमान में अरफ़े के दिन हज़रत आदम की पीठ से निकाली गई थीं, फिर पीठ में लौटा दी गईं। ज़िहाक रह० फरमाते हैं कि अल्लाह ने जिस दिन हज़रत आदम अलै० को पैदा किया, उसी दिन उनकी पीठ से प्रलय तक की दुनिया में आने वाली सब आत्माएं चींटियों की तरह निकाल कर उनसे अपने ईश्वरत्व की स्वीकृति ले ली थी और देवगण गवाह बन गए थे।"

ऊपर लिखित कथन विभिन्न शैलियों में विभिन्न सूत्रों के साथ वर्णित हैं। इन कथनों से ज्ञात होता है कि प्रलय तक आने वाले समस्त मानव जीवन सूक्ष्म कीड़ों के रूप में हजरत आदम (उन पर शान्ति हो) की पीठ में विद्यमान थे, जिसे इन कथनों में कणों की तरह या चींटियों के समान जैसे शब्दों में वृतान्त 'जीव-कण' रखा है। इन जीव-कणों के विभिन्न वर्गों से गुज़रने का वृतान्त जिस कथन में आया है, वह पहले नकल किया जा चुका है।

इस कथन में 'आदम (उन पर शान्ति हो) की सन्तान' के शब्दों का प्रयोग होने से यह समझ में आता है कि रसूलुल्लाह (उन पर शान्ति हो) (अर्थात अन्तिम ईशदूत) को आदम (उन पर शान्ति हो) की सन्तान के सर्वश्रेष्ठ वर्गों में स्थानान्तरित किया जाता रहा, लेकिन यहां यह संकेत मौजूद है कि अन्य मानव जीवन आदम (उन पर शान्ति हो) की सन्तान के बजाय दूसरे वर्गों में भी स्थानान्तरित होते रहे होंगे। वैसे सर्वज्ञानी तो ईश्वरी ही है। आज के वैज्ञानिक युग से पहले इस 'मुतशाबिहात' (अर्थात तन्त्र) के तत्व ज्ञान के खुलने का परिणाम आवागमन के धर्म विश्वास के रूप में प्रकट हुआ। प्रत्येक ईश्वर-प्रेषित ग्रन्थ में दो ज्ञान रखे गए थे। एक 'मोहकमात' (मन्त्र) का और दूसरा मुतशाबिहात (तन्त्र) का। दूसरा ज्ञान किसी और युग के लिए था, उस समय उसे खोलने की अनुमति नहीं थी। अन्तिम संदेष्टा मुहम्मद (उन पर

शान्ति हो) के पावन शारीरिक युग के बाद मुतशाबिहात के ज्ञान के रहस्यों को क्रमशः खुलना था। इस समय केवल इतना समझ लें कि मानव बुद्धि और विवेक जब तक वैज्ञानिक युग आ जाने के बाद परिपक्व नहीं हुआ, उस मसय तक मुतशाबिहात के ज्ञान को खोलने के प्रयास आवागमन के धर्म विश्वास जैसे भटकावों के रूप में प्रकट हुए। कुरआन से पूर्व विश्व में अन्य सभी धर्मों के बिगाड़ और उनकी दन्तकथाओं के पीछे यह वास्तविकता काम कर रही थी उन्होंने मुतशाबिहात के ज्ञान को समय से पहले खोलने का प्रयास किया था।

आवागमन की पृष्ठभूमि में एक और तथ्य

आवागमन के विकृत धर्म-विश्वास के पीछे जो वास्तविकताएं छिपी हुई थीं और जिनको समझ न पाने के कारण यह भ्रमात्मक विश्वास अस्तित्व में आया, उनमें से एक का विस्तार से वर्णन ऊपर किया गया। अब आवागमन का एक और रहस्यमय तथ्य देखिए और विचार किजिए कि किस तरह साफ सुथरी धारणाएं समझ में आ सकने के कारण पथभ्रष्टता में परिवर्तित हो जाती हैं। इस विचार के समर्थन में कुछ अवतरण-समूह हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं-

सनातन धर्म की अलंकृत भाषा में जिसके विषय में ऋग्वेद ने हमें पहले ही सावधान किया था कि, 'मैं स्त्रोता द्वारा वाणी को अलंकृत करता हूँ।' (हिन्दी पत्रिका-मार्गदीप, अप्रैल 1977, पृ० 8)

कठ मन्त्रायणी और अपिष्ठल आदि वेद की शाखाओं में एक सौ एक मृत्युओं का उल्लेख है। इनमें इन्द्रिय, वध, रोग, शोक, और काम, क्रोध आदि सौ मृत्यु हैं, उन सबका प्रतिकार (चिकित्सा) है। (कल्याण गोरखपुर, 1969 जनवरी, पृ० 16)

'वेदों का अभ्यास न करने से, आचार विहीन होने से, आलस्य से, कुधान्य खाने से, ब्राह्मण की मृत्यु हो जाती है।'

(तन्त्रमहाविज्ञान प्रथम, लेखक पं० श्रीराम शर्मा आचार्य पृ० 98)

'खुली हुई बात यह है रोग हो या पाप, अज्ञान हो या आलस्य, उनसे आदमी की वास्तविक मौत नहीं होती, किन्तु उनके पूर्णता स्वस्थ शरीर की 'अलंकृत मौत' अवश्य होती है तथा पाप उसके आदर्श मानव चरित्र की 'अलंकृत मौत' है, अज्ञान, मानसिक शक्ति की मौत है और आलस्य, कर्मशक्ति की, लेकिन चिकित्सा शरीर को, विशुद्ध ज्ञान मस्तिष्क को, संताप(तौबा) आत्मा को, इसी लोक में पुनर्जन्म प्रदान कर सकते हैं।' (हिन्दी पत्रिका मार्गदीप अप्रैल 1977 पृ० 8)

'पाप द्वारा अन्दर ही अन्दर हमारे ही हाथों हमारी मानवता किस प्रकार बार-बार मर रही है और आत्मा पशु बन रही है। एक आदमी जैसे ही लालच और जाति के प्रति युद्ध का अपराध करता है, ईश्वर की दृष्टि में यह पाप उसकी आत्मा को कुत्ते का कुरूप दे देता है। जीते जी, इसी लोक में, क्योंकि कुत्ता उन दुर्गुणों का प्रतीक है, अश्लील कामवासना जैसे आत्मा को उस अपराध के प्रतीक सूअर जैसा बना देती है, मूर्खता गधे जैसा, दानवता सर्प जैसा, हिंसक प्रवृत्ति बिच्छू जैसा, आदि-आदि किन्तु यह आत्मा योनी परिवर्तन ब्रह्मान (रहमत वाले ईश्वर) की ओर से दण्ड, वास्तविक दण्ड नहीं होता, वह तो परलोक में पापियों पर पूरी तरह अपराध सिद्ध करके ही देगा।' (उपरोक्त पृ० 10:11)

यह थी आवागमन की पृष्ठभूमि में एक और वास्तविकता। वेदों में तो साफ-साफ केवल एक बार दूसरे स्थाई जीवन का ही वर्णन है, जैसा कि हम पिछले पृष्ठों में हिन्दू अनुसंधानकर्ताओं और वेदों के दृष्टांत प्रस्तुत करके बता चुके हैं। लेकिन वेदों की कुछ शाखाओं में सैकड़ों मौतों का उल्लेख मिलता है। इस संसार के इसी शरीर में बार-बार आध्यात्मिक रूप से मर कर विभिन्न पशु प्रकृतियों का अपनाना माना वैसा ही पशु बन जाने के तुल्य है, यह वास्तविकता न समझने के कारण इसी संसार में बार-बार शारीरिक मृत्यु को प्राप्त होकर तरह-तरह के जानवरों का रूप

धारण करने की धारणा 'आवागमन' बन गयी।

यह एक उदाहरण है कि किस प्रकार मूल ग्रन्थों की वास्तविक शिक्षाओं की ओर ध्यान आकर्षित कराके बिगड़े हुई और भटकने वाली धर्मनिष्ठाओं में विश्वास रखने वालों को साफ़ सुथरी धार्मिक निष्ठाओं पर लाया जा सकता है।

पुनर्जन्म का मत

आइए अब उन लोगों के मत को देखें जो यह विश्वास रखते हैं कि मृत्यु उपरान्त हमें अपने मालिक के पास जाना है, वहाँ हमारा हिसाब किताब होगा और फिर कर्म अनुसार स्वर्ग या नर्क में जगह मिलेगी:

हमारे भौतिक लोक में कुछ ऐसे भी व्यक्ति हैं जो इस बात में पूर्ण विश्वास रखते हैं। इनमें सामान्यतः 1. यहूदी, 2. ईसाई व 3. मुसलमान शामिल हैं।

बाईबिल में परलौक जीवन

आइए सबसे पहले देखें कि बाईबिल जिसमें ईश्वर के निम्नलिखित तीन ग्रन्थ एकत्र हैं (क) तौरेत जो हजरत मूसा (उन पर शान्ति हो) पर अवतरित हुई (ख) जबूर जो हजरत दाऊद (उन पर शान्ति हो) पर अवतरित हुई (ग) और इंजील जो हजरत ईसा मसीह (उन पर शान्ति हो) पर अवतरित हुई, क्या कहती है पारलौकिक जीवन के बारे में-

(क). यहोवा (ईश्वर) जाति-जाति का न्याय करता है। (पुराना नियम, भजन संहिता, 7:6)

(ख). न्याय का दिन। (नया नियम, लूका की इन्जील, 11:31–32)

(ग). नर्क की आग। (नया नियम, मत्ती इन्जील, 5:22)

(घ). नर्क की आग में सम्पूर्ण शरीर (नया नियम, मत्ती इन्जील, 5:29)

(ङ.). नर्क में डालने का अधिकार (नया नियम, लूका की इन्जील, 12:5)

प्रिय पाठको! हमें खेद है कि तौरेत, जबूर व इन्जील में बहुत ढूंढने पर भी हमें बस यही मन्त्र मिले जो पारलौकिक जीवन के बारे में कुछ बताते हों।

कुरआन में पारलौकिक जीवन

आइए अब देखें कि कुरआन जो अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (उन पर शान्ति हो) पर अवतरित हुआ, क्या वृतान्त बताता है। पारलौकिक जीवन के बारे में अन्तिम ईशग्रन्थ कुरआन ने बताया कि:

1. निर्णय का दिन तो आकर ही रहेगा। (कुरआन 6:51, 34:3–5)

2. वह दिन अकसमात आएगा। (कुरआन 7:187, 36:48–50)

3. वह दिन पलक झपकते ही आएगा। (कुरआन 16:77, 54:50)

4. वह निर्णय का दिन बहुत ही समीप है। (कुरआन 54:1–5, 78:40)

5. उस दिन लोग तीन प्रकार की श्रेणी में बांटे जाएंगे। (कुरआन 56:7)

6. ईश्वर के अत्यन्त समीप आस्था वाले लोग होंगे। (कुरआन 56:11–26)

7. उस दिन हर किसी को पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा। (कुरआन 3–185)

8. उस दिन सारे मतभेद सुलझा दिए जाएंगे। (कुरआन 19:37–39)

9. उस दिन ईश्वर के सामने कोई किसी का बीच बचाव नहीं

करेगा।

10. पूर्ण न्यायपरायणता स्थापित कर दी जाएगी। (कुरआन 21:47)

11. इस लोक में व्यतीत किया हुआ समय बहुत कम लगेगा। (कुरआन 23:112–115)

12. झूठी उपासना/पूजा उस दिन दिखा दी जाएगी। (कुरआन 25:17–19)

13. उस दिन समस्त दोस्त दुश्मन हो जाएंगे। (कुरआन 17:08–18)

14. कुछ मुख प्रतापवान होंगे व कुछ मुख मुरझाए हुए। (कुरआन 80:33–42)

15. उस दिन आकाश फाड़ दिया जाएगा और हर कोई जान लेगा कि उसने क्या कर्म किए। (कुरआन 82:1–5)

16. उस दिन हर छुपी बात खोलकर सामने रख दी जाएगी। (कुरआन 86:9–10)

17. यह पृथ्वी चूर्ण विचूर्ण कर दी जाएगी। (कुरआन 89:21–30)

18. उस दिन स्वर्ग व नर्क दिखाए जाएंगे। (कुरआन 89:21–30)

19. हर व्यक्ति अत्यन्त परेशान होगा कि उसके साथ न जाने क्या मामला किया जाएगा। (कुरआन 89:21–30)

20. हर कुकर्म व सुकर्म का बदला न्यायपरायणता के साथ मिलेगा। (कुरआन 101:1–11)

अन्तिम वेद 'कुरआन' में स्वर्ग का वुत्तांत

1. ईश्वर के समीप वाटिका, अनादिकाल के लिए 'शान्ति का घर'। (कुरआन 3:15, 198)

2. स्वर्ग में ठंडी छांव सुकर्मियों के लिए उपहार। (कुरआन 4:57, 124)

3. ईश्वर उनसे खुश होगा और वे ईश्वर से खुश होंगे। (कुरआन 5:119)

4. मन में किसी प्रकार का डर नहीं होगा। (कुरआन 7:43)

5. ऊँचे-ऊँचे सिंहासन अत्यन्त सजावटी। (कुरआन 18:31, 22:23)

6. मान, सम्मान, गौरव, प्रतिष्ठा, सब ईश्वर की ओर से। (कुरआन 37:41–49)

7. शान्ति के साथ अभिवादन हर प्रकार का आराम व संतुष्टि आनन्दमय वाटिका, अत्यन्त खूबसूरत जोड़े। (कुरआन 56:88–91)

8. स्वर्ग में जाने वालों का प्रताप उनके आगे आगे होगा सबसे बड़ी उपलब्धि स्वर्ग। (कुरआन 57:12)

9. मन की हर इच्छा की पूर्ति। (कुरआन 78:31–35)

10. ईश्वर के स्वर्ग में ठिकाना। (कुरआन 89:30)

अन्तिम वेद 'कुरआन' में नर्क का वुत्तांत

1. नर्क में बार-बार शरीर की त्वचा जलाई जाएगी, फिर पुनः नई त्वचा दी जाएगी, फिर उसे भी जलाया जाएगा.... यही क्रम अनादिकाल चलेगा। (कुरआन 4:56)

2. नर्क में वह जाएगा जिसने ईश्वर का कोई साझी ठहराया होगा।

3. नर्क में वह जाएगा जिसने अपने मालिक के बताए कर्तव्यों से मुँह मोड़ा होगा। (कुरआन 7:51)

4. वहाँ पीने को खौलता हुआ पानी मिलेगा। (कुरआन 14:16:17)

5. पूरा चेहरा आग से झुलसा होगा, आग के कपड़े होंगे। (कुरआन 14:49–50, 22:19–22)

6. नर्क में ऊपर नीचे व चारों ओर दण्ड ही दण्ड मिलेगा। (कुरआन 25:55)

7. ईश्वर के आदेशों, संकेतों, मन्त्रों व निशानियों का इन्कार करने वालों के झुण्ड नर्क में प्रवेश कराए जाएंगे। (कुरआन 39:71–72)

8. नर्क में अनन्त जीवन काल रहना पड़ेगा ईश्वर अन्यायी नहीं होता बल्कि मनुष्य ही स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करता है। (कुरआन 43:74, 76)

9. नर्क की क्षमता असीमित है। (कुरआन 50:30)

10. पापियों को उनके चिन्हों द्वारा पहचाना जा सकेगा। (कुरआन 55:41)

11. पापियों को काला घना धुँआ चारों ओर से घेरा होगा। (कुरआन 56:42–44)

12. ईश्वर का नूर व प्रताप नरक वासियों से रोक लिया जाएगा और उनको भीषण आग में प्रवेश दिया जाएगा। (कुरआन 88:14–16)

13. नर्क एक अथाह गहरा गड्ढा है जहाँ दहकती हुई आग है। (कुरआन 2:9–11)

14. नर्क के अन्दर न तो मृत्यु ही आएगी और न ही वहाँ व्यक्ति जीवित ही रह पाएगा। (कुरआन 20:74, 87:13)

15. नर्क के सात प्रवेश द्वार हैं। (कुरआन 15:44)

निष्कर्ष व अपील

यह था पारलौकिक जीवन का सनातन संदेश जो वेदों में भी मिलता है, और फिर बाद में ईशग्रन्थों अर्थात् तौरेत, ज़बूर, इन्जील और कुरआन में तो जिस वृत्तांत के साथ मिलता है, उससे तो हर

विचारशील व्यक्ति की आत्मा काँप उठेगी। सबसे बड़ी बुद्धिमत्ता तो यही है कि हम सब अपने करूणामय मालिक के आदेशों का पूरी तरह पालन करें व अपनी इच्छाओं को अपने मालिक की इच्छाओं के सामने पूर्णतः समर्पित कर दें और इस लोक में ईश्वर के भक्त व उपासक बनते हुए इस जीवन को गुजार दें, इसे व्यर्थ न जाने दें जो अति मूल्यवान जीवन है, बस हमारे आपके पास एक ही मौका है जब हम अपने अति कृपालू मालिक को खुश कर सकते हैं वरना तो हर हाल में हमें हमारा मालिक उस निर्णय वाले दिन के लिए जमा करेगा तो फिर जिसका निर्णय स्वर्ग हुआ वह तो हमेशा-हमेशा के लिए सफल हो गया और रहे ईश्वर के विद्रोही व अपराधी तो वे बस यही कहेंगे "हाय मेरा दुर्भाग्य! काश मैं मिट्टी ही रहता" !!!